

राजी सेठ

मुगल गार्डन

हमने मान लिया
फूल तुम्हारे हैं
फल तुम्हारे हैं
मखमली दूब तुम्हारी है
संतरी तुम्हारे हैं

मान लिया
उस चौहद्दी के बीच का आसमान
तुम्हारा है
सरहदों से टकरा कर आती हवा
तुम्हारी है

तुम भी जान लो
जड़ें हमारी हैं
खाद हमारी हैं
तुम्हें चौहद्दी भर धूप दे देने वाला
आकाश हमारा है
प्रकाश हमारा है
ढलावों से बहता आता पानी हमारा है
बीजों को लाद लाती हवा हमारी है
शेष सारी धरा हमारी है।

